श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

The printed source of this stotra (Śrī Lakṣmī Sahasranāma Stotra & Nāmāvalī, 2nd edition, Śrī Kṛṣṇa Sabhā, Mumbai, December 2012, pp. 16–35) contains numerous typographical errors. A best attempt has been made to correct them.

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

श्री लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

अस्य श्रीमहालक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्र महामन्त्रस्य श्रीमहाविष्णुभगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मी देवता। श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, हैं कीलकम्, श्रीमहालक्ष्मी प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

॥ ध्यानम् ॥

पद्मानने पद्मकरे सर्वलोकैकपूजिते।
सान्निध्यं कुरु मे चित्ते विष्णुवक्षःस्थलस्थिते ॥ 1 ॥

भगवद् दक्षिणे पार्श्वे श्रियं देवीमवस्थिताम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां जननीं सर्वदेहिनाम् ॥ 2 ॥

चारुस्मितां चारुदतीं चारुनेत्राननभ्रुवम्।
सुकपोलां सुकर्णाग्रन्यस्तमौक्तिककुण्डलाम् ॥ 3 ॥

सुकेशां चारु बिंबोष्ठीं रत्नतुंगघनस्तनीम्।
अलकाग्रैरलिनिभैरलंकृतमुखांबुजाम् ॥ 4 ॥

लसत्कनकसंकाशां पीनसुन्दरकन्धराम्।
निष्ककण्ठीं स्तनालंबिमुक्ताहारविराजिताम् ॥ 5 ॥

नीलकुन्तलमध्यस्थ माणिक्यमकुटोज्ज्वलाम्।
शुक्ल माल्यांबरधरां तप्तहाटकवर्णिनीम् ॥ 6 ॥

अनन्यसुलभैस्तैस्तैर्गुणैः सौम्यमुखैर्निजैः।
अनुरूपानवद्यांगीं हरेर्नित्यानपायिनीम्॥ 7॥

॥ श्री लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रम्॥

श्रीवासुदेवमहिषी पुंप्रधानेश्वरेश्वरी।
अचिन्त्यानन्तविभवा भावाभावविभाविनी॥ 1॥

अहंभावात्मिका पद्मा शान्तानन्तचिदात्मिका[1]।
ब्रह्मभावं गता [2]त्यक्तभेदा सर्वजगन्मयी॥ 2॥

षाड्गुण्यपूर्णा त्रय्यन्तरूपाऽऽत्मानपगामिनी।
[3]एकयोग्याऽशून्यभावाकृतिस्तेजः प्रभाविनी॥ 3॥

[4]भाव्यभावकभावाऽऽत्मभाव्या कामधुगात्मभूः।
भावाभावमयी दिव्या भेद्यभेदकभावनी[5]॥ 4॥

जगत्कुटुम्बिन्यखिलाधारा कामविजृंभिणी।
पञ्चकृत्यकरी पञ्चशक्तिमय्यात्मवल्लभा॥ 5॥

भावाभावानुगा सर्वसम्मताऽऽत्मोपगूहिनी।
अपृथक् चारिणी सौम्या [6]सौम्यरूपव्यवस्थिता॥ 6॥

आद्यन्तरहिता देवी भवभाव्यस्वरूपिणी।
महाविभूतिः समतां गता ज्योतिर्गणेश्वरी॥ 7॥

सर्वकार्यकरी धर्मस्वभावात्माऽग्रतः स्थिता।
आज्ञासमविभक्ताङ्गी ज्ञानानन्दक्रियामयी॥ 8॥

---

[1] जितात्मिका [2] त्यक्तभीता [3] एकयोक्ताशून्यभावा [4] भाव्यभावकभावात्मा भाव्या कामयुगात्मभूः [5] भावगा [6] सौम्यरूपाऽव्यवस्थिता

स्वातन्त्र्यरूपा देवोरःस्थिता तद्धर्मधर्मिणी।
सर्वभूतेश्वरी सर्वभूतमाताऽऽत्ममोहिनी॥ 9॥

सर्वाङ्गसुन्दरी सर्वव्यापिनी प्राप्तयोगिनी।
विमुक्तिदायिनी [1]भक्तिगम्या संसारतारिणी॥ 10॥

[2]धर्मार्थसाधिनी व्योमनिलया व्योमविग्रहा।
पञ्चव्योमपदी [3]रक्षव्यावृत्तिः प्राप्यपूरिणी॥ 11॥

आनन्दरूपा सर्वाप्तिशालिनी शक्तिनायिका।
हिरण्यवर्णा हैरण्यप्राकारा हेममालिनी॥ 12॥

[4]प्रत्नरत्ना भद्रपीठा वेशिनी रजतस्रजा।
स्वाज्ञाकार्यमरा [5]नित्या सुरभिर्व्योमचारिणी॥ 13॥

योगक्षेमवहा सर्वसुलभेच्छाक्रियात्मिका।
[6]करुणाग्रानतमुखी कमलाक्षी शशिप्रभा॥ 14॥

[7]कल्याणदायिनी कल्या कलिकल्मषनाशिनी।
प्रज्ञापरिमिताऽऽत्मानुरूपा [8]सत्योपयाचिता॥ 15॥

मनोज्ञेया ज्ञानगम्या [9]नित्यमुक्तात्मसेविनी।
कर्तृशक्तिः सुगहना भोक्तृशक्तिर्गुणप्रिया॥ 16॥

*ज्ञानशक्तिरनौपम्या [10]निर्विकल्पा निरामया।
[11]अकलङ्काऽमृताधारा महाशक्तिर्विकासिनी॥ 17॥

---

[1] भक्तगम्या [2] धर्मार्थवादिनी [3] रक्षाव्यापृतिः प्राप्तपूरिणी [4] प्रस्फुरत्ता भद्रहोमा [5] नित्यसुरभिः [6] अयं पाठः पूर्वाचार्यैरादृतः। करुणास्नानतमुखी। महासमूहा निखिलप्ररोहा वेदगोचरा – श्रीरंगपाठे इत्थं वर्ततेऽत्र। [7] विस्मयाधायिनी ब्रह्मसंहिता सुगणोत्तरा। [8] सत्योपयार्जिता [9] नित्यमुक्ताऽऽत्मसेविनी * प्रथमं शतकम्।
[10] परशक्तिः [11] अकलङ्का महाशक्तिर्निराधारा

महामाया महानन्दा [1]निःसंकल्पा निराश्रया।
एकस्वरूपा त्रिविधा संख्यातीता निरञ्जना॥ 18॥

[2]आत्मसत्ता नित्यशुचिः परशक्तिः सुखोचिता।
नित्यशान्ता निस्तरङ्गा निर्भिन्ना सर्वभेदिनी॥ 19॥

असङ्कीर्णाऽविधेयात्मा [3]निषेव्या सर्वपालिनी।
निष्कामना सर्वरसाऽभेद्या सर्वार्थसाधिनी॥ 20॥

अनिर्देश्याऽपरिमिता निर्विकारा त्रिलक्षणा।
[4]भयंकरी सिद्धिरूपाऽव्यक्ता सदसदाकृतिः॥ 21॥

अप्रतर्क्याऽप्रतिहता नियन्त्री यन्त्रवाहिनी।
हार्दमूर्तिर्महामूर्तिरव्यक्ता विश्वगोपिनी॥ 22॥

वर्धमानाऽनवद्याङ्गी निरवद्या त्रिवर्गदा।
[5]अप्रमेयाऽक्रिया सूक्ष्मा परनिर्वाणदायिनी॥ 23॥

अविगीता तन्त्रसिद्धा योगसिद्धाऽमरेश्वरी[6]।
विश्वसूतिस्तर्पयन्ती नित्यतृप्ता महौषधिः॥ 24॥

[7]शब्दाह्वया शब्दसहा कृतज्ञा कृतलक्षणा।
त्रिवर्तिनी त्रिलोकस्था भूर्भुवःस्वरयोनिजा॥ 25॥

[8]अग्राह्याऽग्राहिकाऽनन्ताह्वया सर्वातिशायिनी।
व्योमपद्मा कृतधुरा पूर्णकामा महेश्वरी॥ 26॥

---

1 ब्रह्मनीतिः 2 आत्मसक्ता नित्यशुचिर्निर्विकल्पा 3 निषेद्ध्या सर्वपावनी
4 अभयंकरी स्त्री स्वरूपा 5 अप्रमेयाऽमृतदुधा कूटस्था कुलनन्दिनी। 6 महेश्वरी
7 शब्दात्यया 8 आग्राह्यका

सुवाच्या वाचिका सत्यकथना [1]सर्वपालिनी।
लक्ष्यमाणा लक्षयन्ती जगज्ज्येष्ठा शुभावहा॥ 27॥

जगत्प्रतिष्ठा भुवनभर्त्री [2]गूढाप्रभावती।
क्रियायोगात्मिका [3]मूर्तिः हृदब्जस्था महाक्रमा॥ 28॥

परमद्यौः प्रथमजा परमाप्ता जगन्निधिः।
आत्मानपायिनी तुल्यस्वरूपा समलक्षणा॥ 29॥

[*]तुल्यवृत्ता समवया मोदमाना खगध्वजा।
[4]प्रियचेष्टा तुल्यशीला वरदा कामरूपिणी॥ 30॥

समग्रलक्षणाऽनन्ता तुल्यभूतिः [5]सनातनी।
महर्द्धिः सत्यसङ्कल्पा [6]बह्वृचा परमेश्वरी॥ 31॥

जगन्माता सूत्रवती भूतधात्री यशस्विनी।
महाभिलाषा सावित्री प्रधाना सर्वभासिनी॥ 32॥

नानावपुर्बहुभिदा [7] सर्वज्ञा पुण्यकीर्तना।
भूताश्रया [8]हृषीकेश्वर्यशोका वाजिवाहिका॥ 33॥

ब्रह्मात्मिका [9]पुण्यजनिः सत्यकामा समाधिभूः।
हिरण्यगर्भा गंभीरा [10]गोधूलिः कमलासना॥ 34॥

जितक्रोधा कुमुदिनी वैजयन्ती मनोजवा।
धनलक्ष्मीः स्वस्तिकरी राज्यलक्ष्मीर्महासती॥ 35॥

---

[1] सर्वपाविनी [2] गूढाप्रभाविनी – श्री [3] मूर्ता – श्री [*] द्वितीयं शतकम्।
[4] तुल्यचेष्टा [5] सनातना। [6] भूमिजा [7] बहुविधा [8] हृषीकेशा अशोका स्वाङ्गिवाहिका [9] पुण्यजनी [10] गोधूली

जयलक्ष्मीर्महागोष्ठी मघोनी माधवप्रिया।
पद्मगर्भा वेदवती विविक्ता परमेष्ठिनी॥ 36॥

सुवर्णबिन्दुर्महती महायोगिप्रियाऽनघा।
पद्मेस्थिता वेदमयी कुमुदा जयवाहिनी॥ 37॥

संहतिर्निर्मिता ज्योतिर्नियतिर्विविधोत्सवा।
रुद्रवन्द्या सिन्धुमती वेदमाता मधुव्रता॥ 38॥

विश्वंभरा हैमवती समुद्रेच्छाविहारिणी।
अनुकूला यज्ञवती शतकोटिः सुपेशला॥ 39॥

धर्मोदया [1]धर्मसेव्या सुकुमारी सभावती।
भीमा ब्रह्मस्तुता मध्यप्रभा देवर्षिवन्दिता॥ 40॥

देवभोग्या महाभागा प्रतिज्ञा पूर्णशेवधिः।
[2]सुवर्णरुचिरप्रख्या भोगिनी भोगदायिनी॥ 41॥

[3]वसुप्रदोत्तमवधूः गायत्री कमलोद्भवा*।
विद्वत्प्रिया पद्मचिह्ना वरिष्ठा कमलेक्षणा॥ 42॥

पद्मप्रिया सुप्रसन्ना प्रमोदा प्रियपार्श्वगा।
विश्वभूषा कान्तिमती कृष्णा वीणारवोत्सुका॥ 43॥

रोचिष्करी स्वप्रकाशा [4]शोभमानविहङ्गमा।
[5]देवाङ्कस्था परिणतिः कामवत्सा महामतिः॥ 44॥

इल्वलोत्पलनाभाऽधिशमनी वरवर्णिनी।
स्वनिष्ठा पद्मनिलया सद्गतिः पद्मगन्धिनी॥ 45॥

---

1 धर्मसेवा 2 सुवर्णा 3 वसुप्रणा * तृतीयं शतकम्। 4 शोभमाना
5 देवाङ्गस्था

पद्मवर्णा कामयोनिश्चण्डिका चारुकोपना।
रतिस्नुषा पद्मधरा पूज्या त्रैलोक्यमोहिनी॥ **46**॥

नित्यकन्या बिन्दुमालिन्यक्षया [1]सर्वमातृका।
गन्धात्मिका सुरसिका दीप्तमूर्तिः सुमध्यमा॥ **47**॥

पृथुश्रोणी सौम्यमुखी सुभगा विष्टरश्रुतिः।
स्मिताननना [2]चारुदती निम्ननाभिर्महास्तनी॥ **48**॥

स्निग्धवेणी भगवती सुकान्ता वामलोचना।
पल्लवाङ्घ्रिः पद्ममनाः पद्मबोधा महाप्सराः॥ **49**॥

[3]विद्वत्प्रिया चारुहासा शुभदृष्टिः ककुद्मिनी।
कम्बुग्रीवा सुजघना [4]रक्तपाणिर्मनोरमा॥ **50**॥

पद्मिनी मन्दगमना चतुर्दंष्ट्रा चतुर्भुजा।
शुभरेखा [5]विलासभ्रूः शुकवाणी कलावती॥ **51**॥

ऋजुनासा कलरवा वरारोहा तलोदरी।
सन्ध्या बिंबाधरा पूर्वभाषिणी [6]स्त्रीसमाह्वया॥ **52**॥

इक्षुचापा सुमशरा दिव्यभूषा मनोहरा।
वासवी पाण्डरच्छत्रा करभोरुस्तिलोत्तमा॥ **53**॥

सीमन्तिनी प्राणशक्तिः विभीषिण्यसुधारिणी।
[7]भद्रा जयावहा चन्द्रवदना कुटिलालका॥ **54**॥

---

1 सर्वगन्धिनी 2 चारुगतिः 3 सरस्वती 4 रक्तपाणी 5 कलासभ्रूः
6 श्रीसमाह्वया 7 मुद्रा

चित्राम्बरा चित्रगन्धा* रत्नमौलिसमुज्ज्वला।
दिव्यायुधा दिव्यमाल्या [1]विशाखा चित्रवाहना॥ **55**॥

अंबिका सिन्धुतनया [2]सुश्रोणिः [3]सुमहासना।
सामप्रिया [4]नम्रिताङ्गी सर्वसेव्या वराङ्गना॥ **56**॥

गन्धद्वारा दुराधर्षा नित्यपुष्टा करीषिणी।
देवजुष्टाऽऽदित्यवर्णा [5]दिव्यगन्धा [6]सुहृत्तमा॥ **57**॥

अनन्तरूपाऽनन्तस्था सर्वदानन्तसङ्गमा।
[7]यज्ञाशिनी महावृष्टिः सर्वपूज्या वषट्क्रिया॥ **58**॥

योगप्रिया वियन्नाभिरनन्तश्रीरतीन्द्रिया।
योगिसेव्या सत्यरता योगमाया पुरातनी॥ **59**॥

सर्वेश्वरी [8]सुतरणिः शरण्या धर्मदेवता।
सुतरा संवृतज्योतिर्योगिनी योगसिद्धिदा॥ **60**॥

सृष्टिशक्तिः [9]द्योतमाना भूता मङ्गलदेवता।
संहारशक्तिः प्रबला निरुपाधिः परावरा॥ **61**॥

उत्तारिणी तारयन्ती शाश्वती समितिंजया।
महाश्रीरजहत्कीर्तिर्योगश्रीः [10]सिद्धिसाधिनी॥ **62**॥

पुण्यश्रीः पुण्यनिलया ब्रह्मश्रीर्ब्राह्मणप्रिया।
राजश्री राजकलिता फलश्रीः स्वर्गदायिनी॥ **63**॥

---

* चतुर्थं शतकम् 1 विशाला 2 निःश्रेणी 3 सुमहासिनी 4 नवमृगी 5 दिव्यवर्णा 6 स्वकर्दमा 7 यज्ञाशनी 8 सुतरुणिः 9 द्योतमानभूता 10 सिद्धिसाधनी

देवश्रीरद्भुतकथा वेदश्रीः श्रुतिमार्गिणी।
तमोपहाऽव्ययनिधिर्लक्षणा[1] हृदयंगमा॥ **64**॥

[2]मृतसञ्जीविनी शुभ्रा चन्द्रिका सर्वतोमुखी।
सर्वोत्तमा मित्रविन्दा मैथिली प्रियदर्शना॥ **65**॥

सत्यभामा वेदवेद्या सीता प्रणतपोषिणी।
मूलप्रकृतिरीशाना[3] शिवदा दीप्रदीपिनी॥ **66**॥

अभिप्रिया स्वैरवृत्तिः रुक्मिणी सर्वसाक्षिणी।
गान्धारिणी परगतिस्तत्त्वगर्भा भवाभवा*॥ **67**॥

[4]अन्तर्वृत्तिर्महारुद्रा विष्णुदुर्गा महाबला।
मदयन्ती लोकधारिण्यदृश्या सर्वनिष्कृतिः॥ **68**॥

देवसेनाऽऽत्मबलदा[5] वसुधा मुख्यमातृका।
क्षीरधारा घृतमयी जुह्वती यज्ञदक्षिणा॥ **69**॥

योगनिद्रा योगरता ब्रह्मचर्या दुरत्यया।
सिंहपिञ्छा महादुर्गा जयन्ती [6]खड्गधारिणी॥ **70**॥

[7]सर्वार्तिनाशिनी हृष्टा सर्वेच्छापरिपूरिका।
आर्या यशोदा वसुदा धर्मकामार्थमोक्षदा॥ **71**॥

त्रिशूलिनी [8]पद्मचिह्ना महाकालीन्दुमालिनी[9]।
एकवीरा भद्रकाली [10]स्वानन्दिन्युल्लसद्गदा॥ **72**॥

---

[1] लक्ष्मणा [2] मृतसञ्जीवनी [3] ईशानी शिवतातिः प्रदीपिनी * पञ्चमं शतकम्
[4] अन्तर्वर्तिमहामुद्रा [5] आत्मफलदा [6] खगवाहिणी [7] जगप्रिया विरूपाक्षी सुवर्णा क्रूरतापिनी। कात्यायनी कालरात्रिर्निशिदृष्टा करालिका॥ 71॥ [8] खड्गधरा
[9] इन्द्रमालनी [10] सौनन्दी

नारायणी [1]जगत्पूरण्युर्वरा द्रुहिणप्रसूः।
यज्ञकामा लेलिहाना तीर्थकर्युग्रविक्रमा॥ 73॥

गरुत्मदुदयाऽत्युग्रा वाराही मातृभाषिणी।
अश्वक्रान्ता रथक्रान्ता विष्णुक्रान्तोरुचारिणी॥ 74॥

[2]वैरोचनी नारसिंही जीमूता शुभदेक्षणा।
[3]दीक्षाविदा विश्वशक्तिः बीजशक्तिः सुदर्शनी॥ 75॥

[4]प्रतीता जगती वन्यधारिणी कलिनाशिनी।
अयोध्याऽच्छिन्नसन्ताना महारत्ना सुखावहा॥ 76॥

राजवत्यप्रतिभया[5] विनयन्ती महाशना।
अमृतस्यन्दिनी सीमा यज्ञगर्भा [6]समेक्षणा॥ 77॥

आकूतिः ऋग्यजुस्सामघोषाऽ[7]रामवनोत्सुका।
सोमपा माधवी नित्यकल्याणी कमलार्चिता॥ 78॥

[8]योगरूढा स्वार्थजुष्टा वह्निवर्णा जितासुरा।
यज्ञविद्या गुह्यविद्याऽध्यात्मविद्या कृतागमा॥ 79॥

[9]आप्यायनी कलातीता सुमित्रा परभक्तिदा।
कांक्षमाणा महामाया *कोलकामाऽमरावती॥ 80॥

सुवीर्या दुःस्वप्नहरा देवकी वसुदेवता।
सौदामिनी मेघरथा [10]दैत्यदानवमर्दिनी॥ 81॥

---

1 जगत्पूरिणी 2 वैरोचिनी 3 दीक्षाविधा विश्वशक्तिर्निजशक्तिः सुदर्शिनी।
4 प्रतीतिः 5 अर्कप्रतिभा विनयित्रि 6 समीक्षणा 7 अरामवधूत्सुका 8 योगरूढिः
9 आप्यायिनी * षष्ठं शतकम् 10 ऋद्धिदा दैत्यमर्दिनी

श्रेयस्करी चित्रलीलैकाकिनी[1] रत्नपादुका।
मनस्यमाना तुलसी रोगनाशिन्युरुप्रदा[2] ॥ 82 ॥

तेजस्विनी [3]सुखज्वाला मन्दरेखाऽमृताशिनी।
ब्रह्मिष्ठा [4]वह्निशमना जोषमाणा गुणात्यया ॥ 83 ॥

कादम्बरी ब्रह्मरता विधात्र्युज्ज्वलहस्तिका।
अक्षोभ्या सर्वतोभद्रा वयस्या स्वस्तिदक्षिणा ॥ 84 ॥

सहस्रास्या ज्ञानमाता वैश्वानर्यक्षवर्तिनी।
प्रत्यग्वरा वारणवत्यनसूया दुरासदा ॥ 85 ॥

अरुन्धती कुण्डलिनी भव्या दुर्गतिनाशिनी।
मृत्युञ्जया [5]त्रासहरी निर्भया शत्रुसूदिनी ॥ 86 ॥

एकाक्षरा [6]सत्पुरन्ध्री सुरपक्षा [7]सुरातुला।
[8]सकृद्विभाता सर्वार्तिसमुद्रपरिशोषिणी ॥ 87 ॥

बिल्वप्रियाऽवनी चक्रहृदया कम्बुतीर्थगा।
सर्वमन्त्रात्मिका विद्युत् [9]सुवर्णा सर्वरञ्जिनी ॥ 88 ॥

ध्वजच्छत्राश्रया [10]भूतिर्वैष्णवी सद्गुणोज्ज्वला।
सुषेणा लोकविदिता कामसूर्जगदादिभूः ॥ 89 ॥

वेदान्तयोनिर्जिज्ञासा मनीषा समदर्शिनी।
सहस्रशक्तिरावृत्तिः सुस्थिरा श्रेयसां निधिः ॥ 90 ॥

---

1 एकायिनि 2 उरुप्रथा 3 सुखोज्ज्वाला 4 वह्निशमनी जुषमाणा 5 त्रासहरा
6 सुपुरन्ध्री 7 वरातुला 8 सकृद्विभासा प्रद्युम्ना हरिभद्रा धुरन्धरा॥ 9 यशोदा
10 भूमिः

रोहिणी रेवती चन्द्रसोदरी [1]भद्रमोहिनी।
[2]सूर्या कन्याप्रिया विश्वभाविनी सुविभाविनी॥ **91**॥

सुप्रदृश्या कामचारिण्यप्रमत्ता ललन्तिका।
मोक्षलक्ष्मी [3]जगद्योनिर्व्योमलक्ष्मीः सुदुर्लभा॥ **92**॥

भास्करी पुण्यगेहस्था मनोज्ञा विभवप्रदा।
लोकस्वामि*न्यच्युतार्था पुष्कला जगदाकृतिः॥ **93**॥

विचित्रहारिणी कान्ता [4]वाहिनी भूतवासिनी।
प्राणिनी प्राणदा [5]विश्वा विश्वब्रह्माण्डवासिनी॥ **94**॥

संपूर्णा परमोत्साहा [6]श्रीमती श्रीपतिः श्रुतिः।
श्रयन्ती [7]श्रीयमाणा क्ष्मा विश्वरूपा प्रसादिनी॥ **95**॥

[8]हर्षिणी प्रथमा शर्वा विशाला कामवर्षिणी।
सुप्रतीका पृश्निमती निवृत्तिर्विविधा परा॥ **96**॥

सुयज्ञा मधुरा श्रीदा देवरातिर्महामनाः।
स्थूला सर्वाकृतिः [9]स्थेमा निम्नगर्भा तमोनुदा॥ **97**॥

तुष्टिर्वागीश्वरी पुष्टिः [10]सर्वादिः [11]सर्वशोषिणी।
शक्त्यात्मिका शब्दशक्तिः विशिष्टा वायुमत्युमा[12]॥ **98**॥

[13]आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिर्नयात्मिका[14]।
व्याली [15]संकर्षिणी द्योता महादेव्यपराजिता॥ **99**॥

---

[1] भद्रमोदिनी [2] आर्या गव्यप्रिया [3] जगज्ज्योतिः * सप्तमं शतकम् [4] पाविनी भूतभाविनी [5] विद्वत् [6] श्रीपतिः श्रीमतिः [7] श्रयमाणा [8] हर्षणी प्रथमा सर्वा [9] सूक्ष्मा निम्नगव्या [10] सर्वाद्या [11] स्वरुशोषिणी [12] अमा [13] आन्वीक्षकी [14] नियामिका। [15] सङ्कर्षणी

कपिला पिंगला स्वस्था बलाकी घोषनन्दिनी।
अजिता [1]कर्षिणी नीतिर्गरुडा गरुडासना॥ **100**॥

ह्लादिन्यनुग्रहा नित्या ब्रह्मविद्या हिरण्मयी।
मही शुद्धविधा पृथ्वी [2]सन्तानिन्यंशुमालिनी॥ **101**॥

यज्ञाश्रया ख्यातिपरा स्तव्या [3]वृष्टिस्त्रिकालगा।
संबोधिनी शब्दपूर्णा विजयाऽंशुमती कला॥ **102**॥

शिवा स्तुतिप्रिया ख्यातिर्जीवयन्ती पुनर्वसुः।
दीक्षा भक्तार्तिहा रक्षा परीक्षा* यज्ञसंभवा॥ **103**॥

आर्द्रा पुष्करिणी पुण्या गण्या दारिद्र्यभञ्जिनी।
धन्या मान्या [4]पद्मनेमिर्भार्गवी [5]वंशवर्धनी॥ **104**॥

तीक्ष्णाप्रवृत्तिः सत्कीर्तिः [6]निषेव्याऽघविनाशिनी।
संज्ञा निःसंशया पूर्वा वनमाला वसुन्धरा॥ **105**॥

[7]पृथुर्महोत्कटाऽहल्या मण्डलाऽऽश्रितमानदा।
सर्वा नित्योदितोदारा जृम्भमाणा महोदया॥ **106**॥

चन्द्रकान्तोदिता [8]चन्द्रा चतुरश्रा मनोजवा।
बाला कुमारी [9]युवतिः करुणा भक्तवत्सला॥ **107**॥

मेदिन्युपनिषन्मिश्रा [10]सुमवीरुद्धनेश्वरी।
दुर्मर्षणी सुचरिता बोधा शोभा सुवर्चला॥ **108**॥

---

1 कर्षणी क्षान्तिः 2 शतानन्दा 3 धृष्टिः (इति नामावल्या) * अष्टमं शतकम्
4 पद्मनेमी 5 वंशवर्धिनी 6 निधिसेव्याऽघनाशिनी 7 पृथ्वी 8 सूर्या 9 युवती
10 समवीरुः

यमुनाऽक्षौहिणी गङ्गा मन्दाकिन्यमरालया[1]।
गोदा गोदावरी चन्द्रभागा कावेर्युदन्वती॥ **109**॥

सिनीवाली कुहू राका वारणा सिन्धुमत्यमा।
वृद्धिः स्थितिर्ध्रुवा बुद्धिः त्रिगुणा गुणगह्वरा॥ **110**॥

पूर्तिर्मायात्मिका स्फूर्तिर्व्याख्या सूत्रा प्रजावती।
विभूतिर्निष्कलारंभा [2]रक्षा सुविमला क्षमा॥ **111**॥

प्राप्तिर्वासन्तिकालेखा भूरिबीजा महागदा।
अमोघा शान्तिदा [3]स्तुत्या ज्ञानदोत्कर्षिणी [4]शिखा॥ **112**॥

प्रकृतिः [5]गोमती लीला कमला कामधुग्विधिः।
प्रज्ञा *रामा परा सन्ध्या सुभद्रा सर्वमङ्गला॥ **113**॥

नन्दा भद्रा जया रिक्ता [6]तिथिः पूर्णाऽमृतंभरा।
काष्ठा कामेश्वरी निष्ठा काम्या [7]रम्या वरा स्मृतिः॥ **114**॥

शंखिनी चक्रिणी श्यामा [8]समा गोत्रा रमा [9]दितिः।
[10]शान्तिर्दान्तिः स्तुतिः सिद्धिः विरजाऽत्युज्ज्वलाऽव्यया॥ **115**॥

वाणी गौरीन्दिरा लक्ष्मीर्मेधा श्रद्धा [11]सरस्वती।
स्वधा स्वाहा रतिरुषा [12]वसुविद्या धृतिः सहा॥ **116**॥

---

[1] अमलाशया। [2] रम्या (इति नामावलिपाठः) [3] सत्या [4] शिवा [5] भामिनी लीला * नवमं शतकम्। [6] तिथिपूर्णा ऋतंभरा [7] राम्या धरा [8] सामा [9] द्युतिः [10] शान्तिदा स्तुतिः सिद्धिश्च विरजा [11] अप्रमा द्युतिः [12] वसुर्विद्या धृतिः सभा

[1]शिष्टा इष्टा शुची धात्री [2]सुधा रक्षोघ्न्यजाऽमृता।
[3]रत्नावली भारतीडा [4]धीरधीः केवलाऽत्मदा॥ **117**॥

या सा शुद्धिः [5]सस्मिता का नीला राधाऽमृतोद्भवा।
[6]परधुर्यास्पदा ह्रीर्भूः कामिनी शोकनाशिनी॥ **118**॥

[7]मायाकृती रसघना नर्मदा गोकुलाश्रया।
अर्कप्रभा [8]रथेभाश्वनिलयेन्दुप्रभाऽद्भुता॥ **119**॥

श्रीः कृशानुप्रभा वज्रलंभना सर्वभूमिदा।
भोगप्रिया भोगवती भोगीन्द्रशयनासना॥ **120**॥

अश्वपूर्वा रथमध्या [9]हस्तिनादप्रबोधिनी।
सर्वलक्षणलक्षण्या सर्वलोकप्रियङ्करी॥ **121**॥

[10]सर्वोत्कृष्टा सर्वमयी भवभङ्गापहारिणी।
वेदान्तस्था ब्रह्मनीतिर्ज्योतिष्मत्यमृतावहा॥ **122**॥

भूताश्रया निराधारा संहिता सुगुणोत्तरा।
सर्वातिशायिनी प्रीतिः सर्वभूतस्थिता द्विजा।
सर्वमङ्गल माङ्गल्या दृष्टादृष्टफलप्रदा॥ **123**॥

॥ इति श्री लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्॥

---

[1] शिष्टारिष्टा [2] सुधाराऽक्षोण्यजाऽमृता [3] अयं उत्तरश्लोकपूर्वार्धत्वेनान्यत्र दृश्यते। अस्य स्थाने च रमण्येका शारदांबा समेधाऽऽद्या शुभाक्षरा। इति वर्तते। [4] धीरा धीः [5] सोस्मिता [6] वरधुर्या स्वदा [7] मायाप्रीतिरसहना [8] रसेभा श्रीनिलया [9] हस्तिनाथप्रबोधिनी [10] उत्तरश्लोकद्वयं श्रीरंगपाठे न दृश्यते।